# निर्माणवाद किस चिड़िया का नाम है?

**हृदय कांत दीवान**

आजकल संरचनावाद की बहुत बात हो रही है। आगे बढने से पहले इस शब्द के बारे में सोचना अच्छा रहेगा। अंग्रेज़ी में 'Construction' याने बनाना, रचना करना अथवा निर्माण करना से उपजा शब्द यह अहसास दिलाता है कि इसमें कुछ निर्माण होने की बात है। यह निर्माण सीखने के संदर्भ में है, इसलिए इसमें बच्चे भी शामिल हैं और ज्ञान भी। सीखने–सिखाने की बात करते समय इन दोनों का शामिल रहना अनिवार्य हो जाता है। संरचनावाद की, कई तरह की व्याख्याएं की जाती हैं। ये व्याख्याएं इसे मान्य ज्ञान को निर्धारित करने के ढांचे से लेकर मात्र एक विधि के रूप में देखती है। चूंकि इस अवधारणा का आजकल हम बहुत इस्तेमाल करते हैं इसलिए यह समझना आवश्यक हो जाता है कि इन व्यापक दायरों में आनेवाली परिभाषाओं में क्या–क्या अंतर है और इनके निहितार्थ क्या–क्या हो सकते हैं? इस तरह की शब्दावली और उनकी अल–अलग समझ हमेशा से विमर्श को प्रभावित करती रही है। हमारी हाल की शैक्षिक शब्दावली में बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित, बहुकक्षीय – बहु स्तरीय, न्यूनतम अधिगम स्तर, निर्धारित दक्षता आधारित जैसे कई शब्द व्याप्त रहे हैं। इनके सभी के अर्थ की व्याख्याएं भी विभिन्न रूप में हुई हैं और कक्षा तक पहुंचते–पहुंचते ये सभी शब्द लगभग किसी भी स्पष्ट अर्थ के विहीन हो जाते हैं।

इस बात को समझाने के लिए यहां कुछ उदाहरण देना उपयोगी रहेगा। 'न्यूनतम अधिगम स्तर' का एक अर्थ तो यह हो सकता है कि हम कक्षा में कई तरह के व्यापक मुद्दों का अभ्यास करवाएं और बच्चे उनसे जूझकर सीखें। यह प्रक्रिया ऐसी हो जिसमें बच्चे सोचने, करने व भागीदार होने के लिए उत्साहित हों। इस उपयोग की सामग्री का कुछ हिस्सा हम ऐसा चुनें जिससे यह तय कर सकें कि छात्रा अगली कक्षा के लिए आवश्यक क्षमता हासिल कर पाई है या नहीं। याने वह आवश्यक बुनियादी समझ जो उस बच्ची को अगले स्तर पर शामिल करे नहीं तो वह सीख नहीं पाएगी। यह अर्थ भी यह मांग करता है कि हमें पता है कि हर कक्षा के शुरू में बच्चों को क्या–क्या आ ही जाना चाहिए। हम अब यह जानते हैं कि जानने में व सवाल का उत्तर नहीं दे पाने में हमेशा एक से एक की संगति नहीं है। यह भी निर्धारित करना आसान नहीं है कि किसी बच्चे को कुछ आ गया है या नहीं। यहां भी यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि न्यूनतम अधिगम स्तर की व्यावहारिक व उस पूरे दस्तावेज़ के पीछे छिपी सैद्धान्तिक समझ इसमें बहुत फ़र्क़ है। कुछ इसके बारे में बात करना ज़रूरी है।

न्यूनतम अधिगम स्तर जिस तरह से निर्धारित है, उसमें यह सुनिश्चित करवाने का प्रयास है कि किसी भी कक्षा के अंत में कोई भी छात्र उस विषय के अलग–अलग हिस्सों में क्या–क्या तो सीख ही जाएगा। याने पहलेवाले अर्थ से बिल्कुल ही अलग। पहलावाला यह पता करना चाहता है कि इसमें क्या सीखा है और दूसरा यह तय करना चाहता है कि क्या सीख ही लेना है। और धीरे–धीरे इसका अर्थ यह हुआ कि न्यूनतम अधिगम स्तर (न्यूस) यह तय करेगा कि किसी कक्षा में क्या सिखाना है।

इस निर्धारण को मापन योग्य टुकड़ों में बांटकर स्पष्ट तौर पर लिपिबद्ध करने का प्रयास किया गया है। टुकड़ों की अभिव्यक्ति ऐसी भाषा में की गई है जिससे एक आभास हो कि अपेक्षा याद रखने की न होकर, उस कार्य को कर पाने की है। इसे दक्षता आधारित समझ का नाम भी दिया गया है। इन छोटी–छोटी दक्षताओं को हासिल करने की कोई सैद्धान्तिक अथवा दार्शनिक समझ तो प्रस्तुत नहीं की गई है किन्तु इससे उभरी चर्चाओं व उपयोग के ढांचों में यह स्पष्ट है कि अभ्यास व दोहराने को इनको हासिल करने

का एक प्रमुख हथियार माना गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि एक जैसी परिस्थितियों से गुज़रने पर सभी सीख सकते हैं और लगभग एक जैसा ही सीख सकते हैं। 'क्षमताएं' हासिल करने का क्रम सभी के लिए एक समान है और उसका अनुभवजनित निरूपण किया जा सकता है। यही निरूपण एमएलएल आधारित पाठ्यक्रम का आधार है। याने एक बात जो शुरू हुई कि बच्चों में कुछ क्षमताएं आ जाना आवश्यक है, जिससे वे आगे भी सीख सकें और बग़ैर इस पर विचार किए कि 'क्षमता' शब्द का क्या अर्थ माना जा रहा है, यह चिन्ता किए बिना कि कैसे पता करें कि अगली कक्षा के लिए क्या आवश्यक है, या यह बिना सोचे कि क्या यह टुकड़ों में एक–एक कर हासिल की जा सकती है? इस विचार को पाठ्यक्रम ही नहीं सम्पूर्ण पाठ्यचर्या निर्धारित करने का आधार बना लिया गया।

इस अनुभव के बारे में बात करना दो कारणों से आवश्यक था। एक तो जो मैंने बताया कि शब्दों के पीछे छिपे अर्थ और भाव सम्पूर्ण ढांचे के संदर्भ में ही व्याख्यायित हो सकते हैं। इससे हमें संरचनाकार के बारे में सोचते समय सचेत रहने की प्रेरणा मिलेगी। दूसरा, यह कि संरचनावाद की जो अभी बात हो रही है उसका संदर्भ क्या है? संरचनावाद की जो बात हम कर रहे हैं वह विचारात्मक रूप में न्यूनतम अधिगम से दूर जाने के प्रयास में है। जो बंधन और जकड़न न्यून स्तर में है और जो शिक्षा की धारणा उसमें छिपी है वह एक बहुत बड़ी समस्या है। इस धारणा से हटने के प्रयास के लिए कई और तरह की शब्दावली भी उपयोग हुई है। उदाहरण के लिए बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित, मनन के मौक़े आदि–आदि। प्रश्न यह है कि इन सब शब्दों का अर्थ क्या है? इसी तरह जब हम संरचनावाद की बात करते हैं तो यह समझना ज़रूरी हो जाता है कि इसका अर्थ क्या है और उसका कक्षा, शिक्षक व बच्चों समेत सभी पहलुओं से क्या संबंध है?

इसमें से 'गतिविधि आधारित' पर पहले ध्यान दें। यहां मुख्य शब्द 'गतिविधि' है। 'गतिविधि' का क्या अर्थ है और उस गतिविधि आधारित कक्षा में क्या होगा? यह इसकी सार्थकता को समझने के लिए आवश्यक है। इसके अर्थों को समझने के लिए इन उदाहरणों को देखें। पहला सेट – ''कक्षा में शिक्षक बच्चों के साथ पहाड़े के गीत गा रहे हैं।'' सभी बच्चे ज़ोर–ज़ोर से और उत्साह से दोहरा रहे हैं।

''कक्षा में एक बच्चा खड़ा होकर टुकड़े–टुकड़े करके पढ़ रहा है, सभी बच्चे जो वह कर रहा है उसे दोहरा रहे हैं।''

''बच्चे विज्ञान के प्रश्नों के शिक्षक द्वारा लिखवाए गए उत्तर बारी–बारी से पढ़कर सुना रहे हैं।''

''जो सवाल शिक्षक बोर्ड पर करवा चुका है, उन्हें ही बोर्ड पर लिखा गया है और शिक्षक देखता है कि कौन सबसे पहले उत्तर लिखकर दिखाता है।''

''बच्चे ज़ोर–ज़ोर से अ से ज्ञ तक वर्णमाला 'कोरस' में दोहरा रहे हैं।''

''शिक्षक द्वारा बोर्ड पर बनाए गए सुन्दर चित्र की सभी बच्चे अपनी कॉपी में नक़ल कर रहे हैं''

या फिर

दूसरा सेट – ''बच्चे छोटे–छोटे समूह में बैठकर नए पाठ को पढ़ रहे हैं व एक दूसरे से उस पर बात कर रहे हैं और फिर उन्होंने क्या समझा प्रस्तुत कर रहे हैं और उस पर सभी चर्चा कर रहे हैं।''

''बच्चे बाज़ार में, बाग़ में, नदी या तालाब पर गए हैं और वहां सभी चीज़ों को ध्यान से देखकर अपने अवलोकन लिख रहे हैं।''

''बच्चे कुछ पंक्ति की कविता गा रहे हैं और फिर उसमें ताल व अर्थ का ध्यान रखते हुए उसे आगे बढ़ा रहे हैं।'' क्या आपको इन दोनों सेट में कोई अंतर लगता है? पहला सेट ज़्यादातर दोहराने का है, जिसमें बच्चों की भागीदारी तो है किन्तु वह सीमित प्रकार की है।

इससे यह स्पष्ट है कि मात्र एक ही तरह के शब्दों के उपयोग से यह तय नहीं होता कि हम एक ही बात कर रहे हैं। इसी तरह 'बाल केन्द्रित' शब्द के भी कई अर्थ हैं। एक मायने में करके सीखना, गतिविधि आधारित, बाल केन्द्रित शब्दावली को संरचनावाद या निर्माणवाद से जोड़ा जा सकता है। इसका स्रोत सीखने की प्रक्रिया की उस समझ में है, जिसमें माना जाता है कि बच्चे अनुभवों

के आधार पर और उनके अपने पूर्व के अवधारणात्मक ढांचे के संदर्भ में विश्लेषित करके सीखते हैं। हर बच्चे में अवधारणाओं का अपना ढांचा होता है, जो जन्म से हुए उनके अनुभवों के विश्लेषण से बनता है। यह ढांचा नये अनुभवों को अपने में शामिल करता रहता है। यदि कोई अनुभव ऐसा हो वह उस ढांचे में ठीक नहीं बैठे तो ढांचे में बदलाव की ज़रूरत होती है। क्योंकि हमारे अनुभव करने का, महसूस करने का तरीक़ा अलग–अलग होता है। इसलिए हर एक इन्सान का अवधारणात्मक ढांचा अलग–अलग होता है। छोटे बच्चों में यह ढांचा उम्र के साथ विस्तारित व सुदृढ़ होता रहता है।

ज्ञान को अख़्तियार करने की इस समझ को निर्माणवाद कहते हैं और यह पियाज़े व साथियों और उनसे पहले और बाद के लोगों के कार्य पर आधारित है। हालांकि पियाज़े ने सीखने–सिखाने के बारे में कुछ नहीं कहा था और इसे बाल विकास को समझने के लिए प्रस्तुत किया था। फिर भी अन्य लोगों ने इस सिद्धान्त को सीखने–सिखाने के बारे में अपनी बात कहने के लिए उपयोगी पाया और इसे अपने तर्कों का आधार बनाया। निर्माणवाद की एक दूसरी समझ भी है। यह समझ बच्चे के ढांचे के निर्माण व नयी अवधारणाओं के उसमें सम्मिलित होने के बारे में तो ज़्यादा बात नहीं कहती परन्तु यह ज़रूर कहती है कि बच्चे द्वारा ज्ञान के निर्माण के लिए वयस्कों के साथ व पूरे समाज के साथ अंतःक्रिया करना ज़रूरी है। इन्सानी समाज द्वारा हासिल ज्ञान इस तरह की अंतःक्रियाओं से ही बच्चे तक पहुंचता है। वायगोस्की व उसके सहयोगियों द्वारा रखी गई इस समझ की वार्तालाप व भाषा की भूमिका को महत्त्व दिया गया है और इस बात को भी कि बच्चों की सीखने की परिस्थिति होती है और उस समय वह एक दायरे में आनेवाली अवधारणाएं ही सीख सकता है। एक कुशल शिक्षक (वयस्क) यह जान सकता है कि ऐसी कौन सी अवधारणाएं हैं जो बच्चे के लिए सीखनी संभव हैं और वह उनके साथ जूझ सकता है। वायगोत्स्की और उसके साथी यह भी बताते हैं कि बच्चे के साथ अंतःक्रिया इस पर निर्भर होनी चाहिए कि वह अवधारणा सीखने की किस स्थिति में है। जैसे क्या वह वयस्क के साथ ही उस पर कार्य कर सकता है या फिर थोड़ा ख़ुद भी कर सकता है। शिक्षक बीच में या वह अब इतना सक्षम है कि पूरी क्रिया वह ख़ुद कर सकता है और उसे आगे भी बढ़ा सकता है।

दोनों बच्चे के सीखने की प्रक्रिया के बारे में है। ज्ञान क्या है और कौन से ज्ञान को सही माना जाएगा उसके निर्धारण के बारे में कुछ बात नहीं कहते। पियाज़े व साथियों के काम में वयस्कों की भूमिका, भाषा की भूमिका के बारे में उस तरह से बात नहीं कही गई है, जैसे की वायगोस्की के साथियों ने कही है। दोनों में ही बच्चे के स्वयं करने व करने की प्रक्रिया में जूझने को सीखने की प्रक्रिया का सबसे अहम हिस्सा बताया गया है।

संरचनावाद की कई और तरह से व्याख्या की जाती है। इस व्याख्या में यह सीखने की प्रक्रिया न रहकर या तो मात्र एक विधि बन जाता है या फिर बहुत व्यापक होकर ज्ञान की वैधता को जांचने का आधार बन जाता है।

यह ज्ञान की वैधता जांचने का अधिकार इसे कैसे मिल जाता है और कैसे यह छोटे–छोटे समूहों की स्वतंत्रता और स्वयंभूता के पक्ष में हथियार बनता है और आख़िर हद तक ले जाने पर हर व्यक्ति की वैचारिक आधारों को तय करने की स्वतंत्रता का पक्षधर हो जाता है कि बात नहीं करेंगे। यह एक महत्त्वपूर्ण पहलू है और समाज व ज्ञान के रिश्ते, वर्चस्व की लड़ाई, मुख्यधारा के अन्य ज्ञान को कोने में धकेलना जैसे कई बड़े प्रश्नों के साथ जुड़ा है। इसमें मुख्यधारा को निर्धारित करने के तरीक़े, जांच की विकसित कसौटियों पर तो सवाल हैं ही परन्तु ऐसे भी सवाल हैं जो स्कूल में क्या पढ़ाया जाए उसको भी कटघरे में ला खड़ा करते हैं। वे स्कूल के उद्देश्य व उसमें की जा रही अपेक्षाओं पर भी प्रश्न उठाते हैं। इनके बारे में आगे देखते हैं।

संरचनावाद को अगर हम इस तरह से देखें कि बच्चा अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करता है तो ज़ाहिर है कि यह निर्माण वह अपने ढंग से करेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि सीखने की प्रक्रिया में वह अपने रास्ते पर चलेगा और अपने ही पड़ावों पर रुकेगा। इसका अर्थ यह है कि

क्योंकि ये बीच के पड़ाव बहुत बार वयस्कों को ग़लत प्रतीत होते हैं, इसलिए बच्चे द्वारा व्यक्त समझ वह पड़ाव है। वह उत्तर बच्चे की दृष्टि से और बच्चे के लिए सही है। अतः बच्चे को अपना रास्ता तय करने दें।

कक्षा में क्या हो इसके बारे में भी अतिसंरचनावादी समझ रोचक है। वयस्कों को याने शिक्षकों को भी पाठ्यपुस्तक व अन्य सामग्रियों को तय करने का अधिकार नहीं है कि कक्षा में क्या होगा? इस विमर्श में बच्चे शामिल हों और वे ही तय करें। बाल केन्द्रित शब्दावली की भी दृष्टि इसी धारा में है। इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षक को बच्चों से पूछना चाहिए कि कक्षा में उसे क्या करना चाहिए, उन्हें अपनी रुचि व अपनी आवश्यकतानुसार निर्धारित करना है कि वे उस दिन क्या करना चाहते हैं। स्कूल व शिक्षक चाहें तो कुछ विकल्प उनके सामने रख सकते हैं जिनमें से बच्चे चुनें कि उन्हें क्या करना है। यह बात अगर आपको अतिशयोक्तिपूर्ण या अजीब लग रही है तो भी मानना पड़ेगा कि संरचनावाद आधारित व बाल केन्द्रित शिक्षा विमर्शों में यह बड़े पुट में शामिल है। याने संरचनावाद की व्याख्या इन तरहों से करने पर एक तो यह मानता है कि बच्चे का समाज ही उसके ज्ञान का स्रोत व ज्ञान का आधार है, समाज ज्ञान की कसौटी भी है। इसका एक निहितार्थ यह हो सकता है कि बच्चे की शिक्षा समाज ही करेगा और उसके लिए एक खुले स्कूल की कल्पना की जाए जिसमें सभी वयस्क और शायद बच्चे भी शिक्षक हैं।

दूसरा यह मानता है कि हर बच्चे का अपना अलग ही तरीक़ा होता है और उन्हें निर्धारित करना चाहिए कि वे कैसे व क्या सीखना चाहते हैं। इन दोनों पक्षों को गहराई से समझना व इनके क्या निहितार्थ हैं यह जानना अच्छा है। वास्तविक परिस्थितियों में ये दोनों व अन्य मत इतने स्पष्ट नहीं दिखते। उनमें आज की परिस्थिति के कई अन्य विश्लेषण और इनके मिश्रित रूप ही मिलते हैं। कई सार्थक लगनेवाली व्याख्याओं को कुरेदने पर यह उभर सकता है कि वास्तव में मान्य ज्ञान का अर्थ बहुत ही धुंधला हो गया है।

संरचनावाद की ही दूसरे चरम की व्याख्या वह है जो इसे मात्र एक विधि मानती है। यह व्याख्या खेल–खेल में शिक्षण, आनन्ददायी शिक्षण जैसी शब्दावली से निकली है। इस व्याख्या में बच्चे के सम्मिलित होने के ढंग को गहराई से नहीं परखा जाता। याने आप बच्चों को पहले याद करवाएंगे लेकिन संरचनावादी विधि से, या फिर आप गणित के सवाल हल करने के शॉर्टकट अथवा व्याकरण के नियम आदि संरचनावादी तरीक़े से याद करेंगे। यह व्याख्या सीखने की सामग्री के स्वरूप को व सीखनेवाले की भूमिका को नहीं परखती। इस व्याख्या को ज़्यादा व्यवस्थित रूप में और अपेक्षाकृत ज़्यादा बेहतर ढंग से प्रदर्शित किया जा सकता है। उससे ऐसा स्पष्टतः प्रतीत नहीं होता कि यह मात्र एक विधि के स्वरूप में विमर्श में शामिल हो रहा है। उदाहरणार्थ आप यह कह सकते हैं कि हम बच्चों से प्रयोग करवाएंगे। वह स्वयं फिर आज़माएंगे और प्रयोग करेंगे। हम बताएंगे कि प्रयोग में क्या अवलोकन करना है और उन्हें क्या मिलेगा? फिर हम उनको सरल शब्दों में समझाएंगे कि इसका कारण क्या है? इससे उन्हें अपने अवधारणा को स्पष्ट करने में मदद मिलेगी। इसी तरह से आपके पास गतिविधियों का एक व्यवस्थित सेट हो सकता है जिसे बच्चे को क्रम दर क्रम करते चलना है और यह माना जाता है कि यह सेट संरचनावादी सेट बनाएंगे और उन गतिविधियों को करके बच्चा सीख जाएगा। इसी तरह आप संरचनावादी पाठ्यपुस्तक बनाएंगे जिसमें ऐसे अभ्यास होंगे जिन्हें आप संरचनावादी पाठ कहेंगे। इसमें सीखे जानेवाले से अपेक्षाएं उतनी स्पष्ट रूप से नहीं कचोटतीं जैसे कि उदाहरण मैंने दिए हैं लेकिन छीलने पर इनकी बुनियाद में भी जिस ज्ञान के हासिल किए जाने की अपेक्षा है वह स्पष्टतः छिछला दिखने लगता है।

इन दोनों चरम मान्यताओं का रखने का कारण यही था कि हम यह सोच सकें कि आख़िर संरचनावाद जैसे शब्द की शिक्षा व शिक्षण में क्या जगह है? हमारा मानना है कि संरचनावाद इन्सान के सीखने की प्रक्रिया के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण कथन हमारे सामने रखता है। इसके निहितार्थ पाठ्यचर्चा में सभी पहलुओं

पर हैं। इसे मात्र एक विधि मानना बहुत बड़ी भूल है।

किन्तु यह ज्ञान की जांच की कसौटी और ज्ञान के स्वरूप को परिभाषित करने का आधार भी नहीं है। सामाजिक विमर्श व सामायिक मान्य धारणाएं ज्ञान को निर्धारित करने में एक पहलू ज़रूर हैं और ज्ञान के कई हिस्से ऐसे सामाजिक विमर्श से उभरते ज़रूर हैं, किन्तु यह सभी एक व्यापक विमर्श में शामिल हो जाते हैं और मान्य ज्ञान इस व्यापक विमर्श में मान्य जांच की कसौटियों से परखकर ही स्थापित होता है। इसमें 'हैजीमनी' (एकछत्रता) का प्रश्न आ सकता है और विचारों को रोके जाने की चिन्ता हो सकती है और व्यक्तिगत व छोटे समूहों की राय (जो बाद में सही भी सिद्ध हो सकती है) को दरकिनार किया जा सकता है, किन्तु ज्ञान को उस समय की परिस्थिति में कड़े से कड़े उपलब्ध तरीक़ों से जांचने के अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं। यह नहीं कहा जा सकता कि बच्चा अगर हवा में पत्ते को उड़ते और लहराते देखकर कहता है कि पत्ते में उड़ने की शक्ति है तो हमें उसे इस समझ के साथ छोड़ देना चाहिए। वह समय आने पर स्वयं सीख लेगा या फिर यह कहे कि हो सकता है कि यह सही ही हो और बाद में हम इसे सिद्ध कर पाएं। हमें स्वतंत्र सोचने व विचारों को फैलने से रोकने का अधिकार नहीं है। अगर आपको ऐसा लग रहा है कि ऐसा तो कोई नहीं कहेगा तो वह शायद इस उदाहरण के लिए सही है। किन्तु जहां यह कहा जाता है वहां भी बात यही होती है, फ़र्क़ यही होता है कि उस संदर्भ में हमारी मान्य ज्ञान के बारे में समझ इतनी ठोस नहीं होती।

इस सबका अर्थ है कि संरचनावाद एक रास्ता तो दिखाता है किन्तु उसे परिभाषित नहीं करता। वह यह तो कहता है कि बच्चा अपने ज्ञान के ढांचे को अपने व्यक्तिगत व समूह में रहकर प्राप्त अनुभवों के आधार पर विकसित करता रहता है पर इस ज्ञान की सत्यता की कसौटी मात्र उसके, उसके साथियों के व उसके परिचितों के अनुभव नहीं हैं। यह मात्र एक विधि या विधियों का समूह नहीं है। संरचनावाद का शिक्षा में उपयोग, शिक्षा क्यों के प्रश्न पर भी प्रभाव डालता है। इसके उपयोग करनेवाले को यह मानना होगा कि शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान का स्थानान्तरण नहीं वरन् हर इन्सान में वैचारिक स्वतंत्रता व सोच पाने की क्षमता का विकास है। इन्सान की विश्लेषण, तर्क व विवेचन करने की क्षमता उसकी समझ के साथ बढ़ती है और उसके लिए सीखनेवाले को प्रयास करना होगा। शैक्षणिक प्रक्रिया में ऐसे विमर्श की आवश्यकता है, जिसमें सीखनेवाले के विचारों को परखा जा सके व उन पर पुनर्विचार के लिए अनुभव उत्पन्न किए जा सकें। यह मांग करता है कि शिक्षक सीखनेवाले को समझे, उसकी पृष्ठभूमि को जाने, उसके अनुभवों व संस्कृति की इज़्ज़त करे व उससे विमर्श कर सके। उसे विषय की प्रकृति व अवधारणाओं का भी बेहतरतम ज्ञान हो जिससे कि वह बच्चों के अनुभवों व पृष्ठभूमि के लिए उपयुक्त अनुभव व सोचने–विचारने के अभ्यास व कार्य निर्मित कर सकेगा। यह आकलन की प्रक्रिया व उद्देश्य को भी बदलेगा और यह प्रयास करेगा कि हम यह जान सकें कि सीखनेवाला क्या जानता है और क्या सीखने के लिए तैयार है बनिस्बत यह पता करने के कि वह क्या–क्या नहीं जानता।

संरचनावाद पर हालांकि कक्षा में क्या हो, कैसे हो, ज्ञान क्या है, इन्सान के सामाजिक, दार्शनिक परिप्रेक्ष्य क्या हों आदि के बारे में निर्धारण करने का बोझा नहीं डाला जा सकता फिर भी यह स्पष्ट है कि यह इन सबके बारे में इन्सान की बराबरी पर आधारित एक दृष्टि की मांग करता है और सीखनेवाले को शिक्षण प्रक्रिया में इज़्ज़त व स्थान दिए जाने की मांग करता है। संरचनावादी प्रक्रियाएं उन्हीं रास्तों व तरीक़ों को अपना सकती हैं जो प्रजातन्त्र से उभरी स्पष्ट 'एथिकल' बातों के हों।

जहां संरचनावादी कक्षा का कोई मॉडल नहीं हो सकता और वह हर परिस्थिति में अलग ही रूप में उभरेगा, फिर भी संरचनावाद कक्षा स्वरूप के बारे में कई महत्त्वपूर्ण बात कहता है और अच्छी कक्षा के कई संभव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करता है। संरचनावाद हमसे भी आगे जाकर शिक्षा और उसकी पूरी प्रक्रिया मय शिक्षण ढांचों, नियोजन व प्रशासन के लिए दिशा–निर्देश देता है। इनमें कुछ विशेषताएं होने से ही सीखनेवालों को सीखने के संरचनावादी अनुभव मिल सकेंगे।

**हृदय कांत दीवान** : विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर के शैक्षिक सलाहकार हैं।